पाठ 13 **मार्च 24 - 30**

भण्डारीपन के परिणाम

सब्त अपराह्न **मार्च 24**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें: 2तीमु० 3:1-9; यहेज० 14:14; फिलि० 4:4-13; नीति० 3:5; 1पत० 2:11-12; मत्ती 7:23; 25:21 ।

याद वचन: *"अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो; ताकि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें"। (1पतरस 2:12)।*

भण्डारियों के रूप में जिस परमेश्वर की हम सेवा करते हैं उसकी गवाही के तौर पर हमें जीवन जीना चाहिए, जिसका अर्थ है कि हमें उनपर सशक्त प्रभाव डालना चाहिए जो हमारे चारों ओर हैं वह प्रभाव जो भलाई के लिये होता है।

हमारी कहानी तब हमारे चारों ओर की दुनिया से अलग होने की नहीं है। इसके बजाय हम उन्हें जीने का बेहतर तरीका दर्शाने के सौभाग्यशाली हैं जो उन चीजों को नहीं जानते, जिसे हमें दिया गया है। भण्डारीपन फलता-फूलता काम है जब हम परमेश्वर की पुकार को पवित्र जीवन जीने के लिये कार्यान्वित करते हैं। परमेश्वर पृथ्वी पर की अन्य जीवन शैली से अलग प्रकार से जीने की दक्षता हमें देता है (2कुरि० 6:17), और यह कुछ ऐसा है जिसे दूसरे लोग देखें और इसके विषय पूछें। इसलिये हमें कहा गया है: "पर मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ" (1पत० 3:15)।

इस अंतिम पाठ में हम व्यक्तिगत लाभ, आत्मिक निष्कर्ष, सफल परिणाम, हमारा प्रभाव, और भण्डारी के जीवन में संतुष्टि की कुंजी पर निगाह डालेंगे, यह सब जानते हुए कि "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है" (कुलु० 1:27)।

रविवार **मार्च 25**

भण्डारीपन और धार्मिकता

भण्डारीपन एक बृहद विषय है। पवित्र लोग एक पवित्र जीवन शैली जीते हैं (तीतुस 1:1), भक्ति की एक प्राप्ति के साथ मसीह के समान होकर

- सब्त मार्च 31 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

और कार्य जो उसे प्रसन्न करते हैं (भजन० 4:3, तीतुस 2:12), धार्मिकता सच्चे धर्म का प्रमाण है और अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा करता है। कोई दर्शन, धन, प्रसिद्धि, ताकत या समर्पित जन्म ऐसी प्रतिज्ञा नहीं देता।

पढ़ें 2तीमु० 3:1-9. पौलुस यहाँ पर किस विषय में चेतावनी दे रहा है जो प्रत्यक्ष रूप से एक विश्वस्त भण्डारी के जीवन से संबंधित है?

_____

_____

_____

अय्यूब की किताब अय्यूब के चरित्र और कर्मों का विवरण प्रस्तुत करती है। यह चित्रित करता है कि किस प्रकार एक धार्मिक जीवन क्लेश के द्वारा भी प्रकट हो सकता है। यह भी दिखाता है कि शैतान उस जीवन शैली को कितना घृणा करता है। परमेश्वर भी स्वीकार करता है कि विश्वास और जीवन शैली के उसके गुण में अय्यूब के समान कोई दूसरा नहीं था (अय्यूब 2:3)।

"ऊज़ देश में अय्यूब नामक एक पुरुष था; वह खरा और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था (अय्यूब 1:1)। इस प्रकार, हम एक व्यक्ति को देखते हैं जिसका विश्वास शब्दों या धार्मिक संस्कारों की अभिव्यक्ति मात्र नहीं था, वरन वह उसके जीवन का हिस्सा था (अय्यूब 1:5)। परमेश्वर के प्रति उसका भय धार्मिकता के एक सम्पूर्ण जीवन में झलकता था, इतना तक कि भयंकर परीक्षाओं के बीच में भी। धर्मी होने का यह अर्थ नहीं कि हम सिद्ध हैं केवल हम अपने परिवेश में सिद्धता को प्रतिबिम्बित करते हैं।

पढ़ें यहेज० 14:14, बाद में यह क्या कहता है जो इन लोगों के चरित्र की परख करता है? उनमें सामान्य क्या है जो हम में से सब में दिखना चाहिए?

_____

_____

भण्डारीपन वाकई एक धार्मिक जीवन की अभिव्यक्ति है। विश्वस्त भण्डारियों के पास धार्मिकता का आकार ही नहीं है। वे भक्त (धर्मी) हैं और यह भक्ति उनके जीवन से झलकती है कि वे कैसे जीते हैं, चीजों का जिस प्रकार वे प्रबंध करते हैं जिसे उनके परमेश्वर ने उन्हें सौंपा है। उनका विश्वास केवल उस पर व्यक्त नहीं होता जो वे करते हैं वरन उस पर भी जिसे वे नहीं करते।

सोमवार **मार्च 26**

संतुष्टि

"यह नहीं कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता हूँ; क्योंकि मैं ने यह सीखा है कि जिस दशा में हूँ, उसी में संतोष करूँ" (फिलि० 4: 11)। यदि हम जिस भी दशा में हैं संतोष होते हैं, आखिरकार वह संतुष्टि कहाँ से आती है?

_____

_____

तीमुथियुस को लिखते हुए पौलुस लोगों के एक घृणित दल का वर्णन करता है "जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है" (1तीमु० 6: 5) एक बेहतर विवरण जैसे आजकल कुछ धार्मिक कार्यक्रम जो टेलिविजन पर प्रसारित होते हैं श्रोताओं को प्रसारित कर बहुत पैसे कमा लेते हैं कि यदि वे विश्वस्त हैं तो ये श्रोता भी अमीर होंगे? विश्वस्तता का धन के साथ समानता भौतिकवाद का दूसरा प्रदर्शन है लेकिन मसीहियत के आड़ में।

वास्तव में, धार्मिकता का धन के साथ कोई लेना देना नहीं है? यदि ऐसा है तो संसार के कुछ अति खतरनाक लोगों को भी धर्मी माना जा सकता है क्योंकि वे भी अमीरों में हैं। तथापि पौलुस ने प्रत्युतर दिया कि "संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है" (1तीमु० 6: 6)। संतोष सहित भक्ति किसी भी दशा में महानतम दौलत की प्रकार है क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह आर्थिक लाभ से बहुत अधिक मूल्यवान है। इस प्रकार हमें "भोजन और वस्त्र" से संतोष करना चाहिए (1तीमु० 6: 8) आखिर में कोई फर्क नहीं हमारे पास कितना है यदि हमारी उसी प्रकार सोचने की प्रवृति हैं हमेशा कुछ अधिक पाने की चाह होगी।

"हर परिस्थिति में संतोष एक महान कला है, एक आत्मिक रहस्य है। इसे सीखा जाना है, और एक रहस्य के रूप में सीखा जाना है . . . मसीही संतोष आत्मा का वह मधुर, आन्तरिक, शान्त, आरामदायक ढांचा है, जो प्रत्येक हालत में परमेश्वर के ज्ञानी और पिता तुल्य अधिकार में मुफ्त प्रस्तुत होता और प्रसन्न होता है. . . यह कीमती मलहम का डिब्बा है और दु:खी हृदय के लिये कष्टमय समयों और हालातों में उपयोगी एवं बहुत आरामदेह है।" – Jeremiah Burroughs. The Rare Jewel of Christian Contentment, pp. 1, 3.

पढ़ें रोमियों 8: 28, इब्रानी 13: 5, एवं फिलिपियों 4: 4-13. हम यहाँ पर क्या पा सकते हैं जो हमें सन्तुष्ट जीवन जीने में मदद कर सकता है?

मंगलवार **मार्च 27**

भरोसा

पढ़ें नीतिवचन 3:5. यहाँ पर खासकर अंतिम भाग में हमारे लिये कौन-सा अत्यावश्यक संवाद है कि हम हमारी समझ का सहारा न लें? (इसे भी देखें यशा० 55:9, 1कुरि० 4:5, 13:12)।

परमेश्वर के भण्डारियों का आदर्श और लक्ष्य है "तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना" (नीति० 3:5)।

निस्संदेह कहना, करने से सहज है। बहुधा कितनी बार हम बौद्धिक रूप से परमेश्वर में और उसके प्रेम में और हमारे लिये परवाह में विश्वास करते हैं, और तब भी हम स्वयं के लिये चिंतित होते हैं और किसी बात पर बीमार हो जाते हैं जिसका हम सामना कर रहे होते हैं? कभी-कभी हमारी कल्पनाओं में भविष्य बहुत डरावना प्रतीत होता है।

तब हम भण्डारियों के तौर पर परमेश्वर पर भरोसा करना कैसे सीखते हैं? विश्वास में कदम रखते हुए और अभी हम जो कुछ भी करते हैं, परमेश्वर की आज्ञा मानते हुए, यह सीख सकते हैं। विश्वास मन की एक कार्यवाही है जो प्रयोग करने के द्वारा खाली नहीं हो जाता; इसके विपरीत, जितना अधिक हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं उतना ही अधिक हमारा भरोसा बढ़ेगा। विश्वस्त भण्डारियों की तरह जीना परमेश्वर पर हमारे भरोसे को अभिव्यक्त करने का एक तरीका है। यह भरोसा भण्डारी का प्रेरक बल और आधार है, और हम जो करते हैं उसके द्वारा यह दृश्यमान होता है। "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन से प्रेम रख।" वाक्यांश "सारे मन से" पवित्रशास्त्र में हमेशा आलंकारिक रूप से प्रयुक्त हुआ है। इसका अर्थ है कि हमारे निर्णय आंतरिक आत्म नैतिकता से आते हैं जो यह बतालाते हैं कि हम कौन हैं (मत्ती 22:37)। यह हमारे चरित्र प्रयोजनों, और इरादों– हमारे अस्तित्व के बिलकुल अन्तर्भाग को सम्मिलित करता है।

उन चीजों के साथ जिन्हें आप नियंत्रित नहीं कर सकते परमेश्वर पर भरोसा करना सहज है। इस अर्थ में उसपर भरोसा करने के सिवाय हमारे पास

कोई विकल्प नहीं हैं। इसके बजाय वास्तविक भरोसा "हृदय से" आता है जब हमें किसी चीज से संबंधित एक चुनाव करना पड़ता है जिसे हम नियंत्रित कर सकते हैं, और जब परमेश्वर पर हमारा भरोसा हमें एक या अन्य को चुनने को प्रेरित करता है।

चेले अपने सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर पर भरोसा करने को स्पष्ट करते हैं: "वे स्वभाव से वैसे ही कमजोर और निस्सहाय थे जैसे वे जो अभी काम पर लगे हुए हैं, परन्तु वे अपना सम्पूर्ण भरोसा प्रभु पर स्थिर करते हैं। उनके पास दौलत थी, परन्तु यह मन और हृदय को शामिल करती थी; और यह हरेक के पास हो सकती है जो परमेश्वर को प्रथम और अंत और सब वस्तुओं में सर्वोत्तम बनायेंगे।" – Ellen G. White, Gospel Workers, p. 25.

यह सत्य है कि उन चीजों से संबंधित जिन्हें आप नियंत्रित नहीं कर सकते, परमेश्वर पर भरोसा करना सहज है। लेकिन उन चीजों के विषय क्या है जिन्हें आप नियंत्रित कर सकते हैं? आप को कौन से विकल्प बनाने की जरूरत है जिसमें आपका परमेश्वर पर भरोसा निर्धारित करेगा कि कौन-सा रास्ता आपको चुनना है?

बुधवार **मार्च 28**

हमारा प्रभाव

"क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो" (इफि० 5: 8)। पौलुस हृदय परिवर्तन का वर्णन करता है जो अस्तित्व के तौर पर सार्वजनिक रूप से दिखता है : जैसे हम "ज्योति में चलते हैं" (1यूहन्ना 1: 7, यशा० 30: 21), व्यवस्थित भण्डारीपन की हमारी प्रतिदिन की गवाही एक अन्धकारमय जगत में प्रभावशाली ज्योति होगी।

यीशु ने कहा, "जगत की ज्योति मैं हूँ" (यूहन्ना 8: 12)। हम एक स्थिर चरित्र के द्वारा परमेश्वर की ज्योति को हमारे प्रति दिन के सार्वजनिक व्यवहार में प्रतिबिम्बित करते हैं।

दिखावे में हमारा भण्डारीपन कैसा है जिस तरह से यह परमेश्वर की महिमा करता है? दूसरों पर हमारे कर्म के प्रभाव क्या हैं? मत्ती 5: 16, तीतुस 2: 7, 1पत० 2: 11-12.

भण्डारीपन परमेश्वर की सम्पत्तियों के विषय प्रबंधन है, परन्तु यह इस जिम्मेदारी से बढ़कर है। हमारा भण्डारीपन हमारे परिवारों, समुदायों, और संसार

के सामने प्रदर्शनी में है (1कुरि० 4:9), भण्डारीपन हमारे पेशे में जीवित रहता है और प्रभाव को प्रदर्शित करता है कि राज्य के सिद्धान्त हमारे जीवनों में है । और इस प्रकार, हम दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं। हम दयालुता और नैतिकता के द्वारा मसीह को प्रकट करते हैं, जो सृष्टिकर्ता की स्वीकृति को प्रकट करता है।

हमारी कार्य नीति को भी हमारे भण्डारीपन के मूल्यों के साथ मेल होना चाहिए। हमारा पेशा एक मंच है जिसपर एक धर्मी व्यक्ति का भण्डारीपन प्रकट होता है। "और वह तेरा धर्म ज्योति की नाई, और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले की नाई प्रगट करेगा" (भजन 37:6)। एक भण्डारी के प्रभाव काम पर या उसकी योग्यता "दीयाबार के तलघरे में, या पैमाने के नीचे नहीं रखता" (लूका 11:33), परन्तु पहाड़ पर बसा हुआ शहर के समान दिखता है (मत्ती 5:14)। जैसे आप उद्देश्यपूर्वक घर पर और काम पर इस रीति से जीवन जीते हैं, आप अपने चारों ओर के लोगों के मनों और हृदयों को प्रभावित करेंगे।

"प्रकृति में प्रत्येक का अपना नियुक्त कार्य होता है और अपने पद पर बड़बड़ाता नहीं। आत्मिक चीजों में प्रत्येक पुरुष और स्त्री के विशेष क्षेत्र और योग्यताएँ होती हैं। मुनाफा जिसकी परमेश्वर माँग करता है, मसीह के उपहार के मापानुसार हमें सौंपे गये मूलधन की मात्रा के अनुपात में होगा. . . अभी आपका समय और सौभाग्य चरित की स्थिरता को दिखाने के लिये है जो आपको वास्तविक नैतिक मूल्य का बनायेगा। आपकी सेवा का परमेश्वर को अधिकार है। हृदय से उसको समर्पित हो जायें।"– Ellen G. White, This day with God, p. 243.

आपकी कार्य नीति किस प्रकार के प्रभाव को उन पर प्रकट करती है जिनके साथ आप काम करते अथवा जो लोग आपको घर पर देखते हैं? आप उन तक अपने विश्वास के किस संदेश को भेजते हैं?

बृहस्पतिवार **मार्च 29**

शब्द हम सुनना चाहते (और नहीं चाहते) हैं

हम इस पृथ्वी पर परदेशी और तीर्थयात्री हैं, स्वर्ग-सिद्ध, सुन्दर, और शान्ति की तरह हमारा अंतिम लक्ष्य है (इब्रा० 11:13-14)। जब तक हमें यहाँ पर हमारे अस्तित्व को जीना है। मसीही विश्वावलोकन, जैसा महान् संघर्ष में प्रकट है, अब किसी तटस्थ दलों को स्वीकार नहीं करता है। हम अन्यथा परमेश्वर को प्रेम करें या दुश्मन को। "जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे

विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह विखेरता है" (मत्ती 12:30)। जब वह वापस आता है हम किसके पक्ष में हैं स्पष्ट और साफ तौर से प्रकट होगा।

मसीह के वापस आने के बाद, कुछ विन्दु पर वे जिन्होंने उसका अनुसरण करने का दावा किया दो वाक्यांशों में से एक को सुनेंगे। वे वाक्यांश क्या है और प्रत्येक का क्या अर्थ है?

मत्ती 25:21 _____

_____

मत्ती 7:23 _____

_____

मसीह के शब्द "धन्य" बहुत ही आनन्ददयी और संतोषजनक शब्द हैं जिन्हें एक भण्डारी सुनेगा। ईश्वरीय, अयोग्य स्वीकृति का होना जो उसकी संपत्तियों के प्रबंधन के हमारे प्रयासों में प्रकट हुआ, हमारी योग्यताओं की बेहतरी के अनुसार अकथनीय आनन्द को लायेगा, क्योंकि हमेशा से जानते हुए कि हमारा उद्धार मसीह के लिये हमारे कामों में नहीं परन्तु हम पर उसके कामों में स्थिर है (देखें रोमि० 3:21, 4:6)।

एक विश्वस्त भण्डारी का जीवन विश्वास की परछाई जो उसके पास पहले से है। कर्मों के द्वारा उद्धार पाने का प्रयास उनके शब्दों में देखा जाता है जो अपने कर्मों के द्वारा परमेश्वर के सामने स्वयं को सिद्ध करने की कोशिश करते हैं (देखें मत्ती 7:21-22)। मत्ती 7:23 दिखाता है कि वास्तव में स्व० धार्मिकता कितनी व्यर्थ है।

"जब मसीह के अनुगामी प्रभु को स्वयं का वापस देते हैं वे खजाने को इकट्ठा कर रहे हैं, जो उन्हें दिया जायेगा जब वे शब्दों को सुनेंगे, "धन्य अच्छे और विश्वासयोग्य दास, ... अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।"– Ellen G. White, The desire of Ages, p. 523.

अंत में, भण्डारीपन एक जीवन है जो दो महानतम आज्ञाओं में जीया गया, परमेश्वर के प्रति प्रेम और हमारे पड़ोसियों के प्रति प्रेम, उन सबमें जो एक व्यक्ति करता है प्रेरणा और प्रेरक बल हैं।

कितने बेहतरीन ढंग से आपका स्वयं का जीवन, और भण्डारीपन आपके जीवन में प्रकट हुआ, जो इन दो महानतम आज्ञाओं को प्रतिबिम्बित करता है?

अतिरिक्त अध्ययन: "मसीह इस जगत में परमेश्वर के प्रेम को प्रकट करने के लिये आया। उसके अनुगामियों के काम को जारी रखना है जिसे उसने शुरू किया। चलिये एक दूसरे को मदद और मजबूत करने का यत्न करें। दूसरों की अच्छाई को देखना एक तरीका है जिसमें सच्ची खुशी पायी जा सकती है। परमेश्वर और अपने सह मनुष्यों को प्रेम करने के द्वारा वह अपने-स्वयं की रुचि के खिलाफ काम नहीं करता है। जितना अधिक उसकी आत्मा निस्वार्थ होती है उतना ही अधिक वह सुखी होता है क्योंकि वह अपने लिये परमेश्वर के उद्देश्य को परिपूर्ण कर रहा है।"– Ellen G. White, Counsels on Stewardship, pp. 24, 25.

"जहाँ कहीं भी कलीसिया में जीवन होता है, तरक्की और बढ़ोतरी होती है। यहाँ पर अनवरत बदलाव भी होता है, लेना और देना, पाना और प्रभु को उसके स्वयं का वापस करना। प्रत्येक सच्चे विश्वासी को परमेश्वर ज्योति और आशीष देता है और इसे विश्वासी काम के द्वारा जो वह प्रभु के लिये करता है दूसरों को बाँटता है। जैसे वह प्राप्त करता है उसमें से देता है, उसके प्राप्त करने की क्षमता बढ़ जाती है। अनुग्रह और सच्चाई की ताजी उपलब्धता के लिये जगह बनी हुई है। स्पष्ट ज्योति, बढ़ा हुआ ज्ञान उसके हैं। इस देने और प्राप्त करने पर कलीसिया की बढ़ोतरी और जीवन निर्भर है। वह जो प्राप्त करता है पर कभी नहीं देता है जल्द ही प्राप्त करना बन्द हो जाता है। यदि सच्चाई उससे दूसरों तक न बहे, वह अपने प्राप्त करने की क्षमता को खो देता है। हमें स्वर्ग की अच्छाईयों को बाँटनी चाहिए, यदि हम ताजी आशीष को प्राप्त करना चाहते हैं।"– Ellen G. White, Counsels on Stewardship, p. 36.

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न :

1. प्रभु पर भरोसा करना किस प्रकार संतुष्टि की ओर अगुवाई करता है? सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर पर भरोसा रखने के लिये बौद्धिक स्तर पर किस चीज की आवश्यकता होती है? (2कुरि० 10: 5)। ऐसा कहना क्यों इतना सहज है "सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है" (रोमि० 8: 28) परन्तु इसे विश्वास करना इतना कठिन है? अर्थात् हम क्यों कहते हैं कि हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, और सचमुच बौद्धिक स्तर पर उस पर भरोसा करते हैं, और फिर भी भविष्य के प्रति इतने भयभीत हैं?

2. कक्षा में यह प्रश्न पूछें और तब उत्तरों की तुलना करें: "25 शब्दों या कम में भण्डारीपन की आपकी परिभाषा क्या है?" तब प्रश्न पूछें: "25 शब्दों या कम में, भण्डारीपन मसीही के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा क्यों है?"

3. पुन: पढ़ें मत्ती 7: 21-23. यहाँ पर क्या हो रहा है? ये लोग क्यों कहते हैं जिन चीजों को वे करते हैं? उनके शब्द उनके स्वयं के विषय क्या प्रकट करते हैं? हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि जैसे ही हम अच्छे भण्डारी होने की इच्छा करते हैं, जैसे ही हम विश्वस्त और आज्ञाकारी जीवन जीने की इच्छा करते हैं, जैसे ही परमेश्वर के नाम में अच्छे काम करने की इच्छा करते हैं– हम उसी प्रकार के आत्म-छल में नहीं गिर जाते हैं?

4. हम केवल बौद्धिक स्तर पर ही मसीही प्रभाव के बारे में सोचने को प्रवृत होते हैं। लेकिन आपके स्थानीय चर्च के स्तर पर क्या है? समग्र रूप से आपकी कलीसिया का समुदाय में किस प्रकार का प्रभाव है?